01-नवम्बर-2024 से 07-नवम्बर-2024

जिंसों का घूमता आइना-तिलहन

(01-नवम्बर-2024 से 07-नवम्बर-2024)

आठ माह में करीब 84 लाख टन सरसों की क्रशिंग होने का अनुमान
राजस्थान में प्रमुख रबी फसलों का रकबा गत वर्ष से पीछे
जीएम फसलों के लिए नीति किसानों के अनुकूल होना आवश्यक
तिलहन-तेल के वैश्विक बाजार भाव में तेजी-मजबूती बरकरार रहने की उम्मीद
बेहतर घरेलू उत्पादन की वजह से खाद्य तेलों का आयात घटने की संभावना
दलहन-तिलहन फसलों की पैदावार बढ़ाने हेतु सरकार को गंभीर प्रयास करने की जरूरत
दक्षिण भारत में बारिश-उत्तरी राज्यों में तापमान में गिरावट

साप्ताहिक समीक्षा-सरसों

नई दिल्ली। रबी सीजन की सबसे प्रमुख तिलहन फसल-सरसों की बिजाई राजस्थान सहित कुछ अन्य राज्यों में आरम्भ हो चुकी है। त्यौहारी सीजन के लिए सरसों तेल की मांग पिछले महीने के अंत तक लगभग पूरी हो गयी थी इसलिए 1-7 नवम्बर वाले सप्ताह के दौरान इस तिलहन के दाम में 100-150 रुपए प्रति क्विंटल का उतार-चढ़ाव दर्ज किया गया। 42 प्रतिशत कन्डीशन वाली सरसों का दाम दिल्ली में 50 रुपए गिरकर 6550 रुपए प्रति क्विंटल रह गया मगर जयपुर में 25 रुपए सुधरकर 6800/6825 रुपए पर पहुंच गया। हरियाणा में औसत क्वालिटी की सरसों सिरसा में 100 रुपए तथा बरवाला में 50 रुपए तेज रही जबकि चरखी दादरी में 75 रुपए नरम पड़ गयी। इसी तरह मध्य प्रदेश के मुरैना एवं पोरसा में तो भाव स्थिर रहा मगर ग्वालियर में 150 रूपये तेज हो गया।

सबसे प्रमुख उत्पादक प्रान्त - राजस्थान में कमजोर मांग के कारण भरतपुर, अलवर तथा खैरथल में सरसों का दाम नीचे रहा। उत्तर प्रदेश के हापुड़ में 50 रुपए एवं आगरा में 100 रुपए की नरमी रही लेकिन राजस्थान के बीकानेर में सरसों में 100 रुपए की तेजी दर्ज की गयी।

सरसों तेल

सरसों तेल का दाम भी नरम रहा। दिल्ली में यह 30 रुपए घटकर 1380 रुपए प्रति 10 किलो पर आया मगर मुंबई में 20 रुपए एवं बीकानेर में 40 रुपए ऊपर उठ गया।

सरसों आवक

समीक्षाधीन सप्ताह के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर सरसों के दैनिक आवक घटकर 2.00-2.25 लाख बोरी रह गयी लेकिन फिर भी मिलर्स एवं व्यापारियों द्वारा इसकी खरीद में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई गयी।

सरसों खल/डीओसी

सरसों तेल के साथ साथ खल एवं डीओसी की मांग भी अब कमजोर पड़ने लगी है। सरसों का भाव नरम पड़ने पर इसकी बिजाई प्रभावित हो सकती है। हालाँकि सप्ताह के दौरान सरसों खल के दाम में 20 से 30 रुपए तक की वृद्धि दर्ज की गयी। मगर डीओसी का दाम कुछ नरम पड़ गया।

igrain India Pvt.Ltd.
The Complete Agri Solution
2181-A, Ist Floor, Raja Park, Main Rani Bagh Road, DELHI-110034

SARSON (PRICE IN RS./QTL)

STATE	DELHI	HAR.	RAJ.	RAJ.		U.P	W.B			W.B
CITY	DELHI	CH.DDRI	JPR.	BHRTPR	KOTA	AGRA	KOL.			KOL.
VARIETY	42%CON	AVR.	42%CON	AVR.	AVR.	AVR.	U.P	M.P	RAJ.	HAR.
01-11-2024	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	
02-11-2024	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	
04-11-2024	6600	6700	6800	6525	5800/6050	7200/7620	6500/6600	6500/6600	N.A	N.A
05-11-2024	6650	6625	6750	6450	5800/6000	7150/7570	6550/6650	6550/6650	N.A	N.A
06-11-2024	6600	6600	6750	CLOSE	5800/6225	7100/7495	6500/6600	6500/6600	N.A	N.A
07-11-2024	6550	6625	6800/6825	6411	5800/6200	7100/7520	6450/6550	6450/6550	N.A	N.A

SARSON OIL (PRICE IN RS./QTL)

STATE	HARIYANA		RAJASTHAN		RAJASTHAN			U.P	W.B
CITY	BARWALA	CH.DDRI	GANGANAGAR		JPR	BHRTPR	BHRTPR	AGRA	KOL.
VARIETY	EXP.	EXP.	K.GHNI	EXP.	K.GHNI	K.GHNI	EXP.	K.GHNI	K.GHNI
01-11-2024	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY
02-11-2024	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	1440
04-11-2024	NO SALE	1417	NO SALE	NO SALE	1410/1411	1430	1410	NO SALE	1440
05-11-2024	NO SALE	1400	1400	1380	1410/1411	1400	1380	1450	1450
06-11-2024	NO SALE	1395	1385	1365	1405/1406	CLOSE	CLOSE	1450	1440
07-11-2024	NO SALE	1405	1390	1370	1414/1415	1430	1410	1450	1440

SARSON KHL (PRICE IN RS./QTL)

CITY	CH.DDRI	MORENA	GANGANAGAR	JAIPUR	BHARATPUR	ALWAR	KHAIRTHAL
VATIETY	AVERAGE	AVERAGE	AVERAGE	AVERAGE	AVERAGE	AVERAGE	AVERAGE
01-11-2024	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY
02-11-2024	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY	HOLIDAY
04-11-2024	2430	2550	NO SALE	2480/2485	2600	2450	2450
05-11-2024	2440	2550	NO SALE	2495/2500	2600	2450	2450
06-11-2024	2440	2550	NO SALE	2485/2490	CLOSE	2425	2425
07-11-2024	2450	2550	NO SALE	2470/2475	2600	2450	2450

आठ माह में करीब 84 लाख टन सरसों की क्रशिंग होने का अनुमान

जयपुर। घरेलू बाजार भाव ऊंचा रहने से जहां किसानों को थोक मंडियों में अपनी सरसों का अधिक से अधिक स्टॉक उतारने का प्रोत्साहन मिला वहीं सरसों तेल एवं खल की कीमत लाभप्रद स्तर पर रहने से मिलर्स को इसकी क्रशिंग- प्रोसेसिंग की रफ्तार बढ़ाने में कठिनाई नहीं हुई। जयपुर (राजस्थान) के चांदपोल की अनाज मंडी में अवस्थित लोकप्रिय एवं विश्वसनीय प्रतिष्ठान- मरुधर ट्रेडिंग एजेंसी के मैनेजिंग डायरेक्टर- अनिल चतर द्वारा संकलित आंकड़ों से पता चलता है कि वर्तमान रबी मार्केटिंग सीजन के शुरूआती आठ महीनों में यानी मार्च-अक्टूबर 2024 के दौरान देश में करीब 84 लाख टन सरसों की क्रशिंग हुई। इसके तहत मार्च में 13 लाख टन, अप्रैल में 12.50 लाख टन, मई एवं जून में 10-10 लाख टन, जुलाई में 9 लाख टन, अगस्त में 10 लाख टन, सितम्बर में 9.50 लाख टन तथा अक्टूबर में 10 लाख टन सरसों की क्रशिंग होने का अनुमान लगाया गया है। एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक समीक्षाधीन अवधि के दौरान प्रमुख उत्पादक राज्यों की मंडियों में तथा सरकारी क्रय केन्द्रों पर कुल मिलाकर 95 लाख टन सरसों की आवक हुई। इसमें से 20 लाख टन की खरीद नैफेड एवं हैफेड जैसे सरकारी एजेंसियों द्वारा की गई। इन एजेंसियों के पास 7.50 लाख टन का पिछला बकाया स्टॉक भी था। इसमें से 9.50 लाख टन की बिक्री हो गई और 1 नवम्बर 2024 के उसके पास 18 लाख टन सरसों का स्टॉक बचा हुआ था। उद्योग-व्यापार संगठनों ने 2023-24 के रबी सीजन में 115 लाख टन सरसों के घरेलू उत्पादन की संभावना (संशोधित अनुमान) व्यक्त की है। इसके तहत राजस्थान में 53 लाख टन, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश में 13-13 लाख टन, हरियाणा-पंजाब में 12 लाख टन, गुजरात में 5 लाख टन तथा बिहार - बंगाल सहित अन्य राज्यों में 19 लाख टन सरसों के उत्पादन का अनुमान लगाया गया है। इसमें से फरवरी में हुई 7 लाख टन की आवक को निकाल देने पर मार्केटिंग सीजन के लिए 108 लाख टन का स्टॉक बचा मगर 12 लाख टन के पिछले बकाया स्टॉक का योग करने पर कुल उपलब्धता 120 लाख टन पर पहुंची। इसमें से 95 लाख टन की आवक 31 अक्टूबर तक हुई। एजेंसी के मुताबिक 1 नवम्बर 2024 को किसानों के पास 13 लाख टन प्रोसेसर्स एवं स्टॉकिस्टों के पास 5 लाख टन तथा सरकारी एजेंसियों के पास 18 लाख टन सहित देश में कुल करीब 36 लाख टन सरसों का स्टॉक उपलब्ध था। सरसों की बिजाई पहले ही आरंभ हो चुकी है और इसकी नई फसल की कटाई-तैयारी फरवरी-मार्च में शुरू होगी।

राजस्थान में प्रमुख रबी फसलों का रकबा गत वर्ष से पीछे

जयपुर। सरसों तथा जौ के सबसे बड़े तथा चना एवं गेहूं के एक प्रमुख उत्पादक प्रान्त- राजस्थान में पिछले साल के मुकाबले चालू वर्ष के दौरान रबी फसलों की बिजाई धीमी गति से हो रही है। एक तो वहां खरीफ फसलों की कटाई-तैयारी जोर नहीं पकड़ पाई है और दूसरे कुछ मिलों में बारिश कम होने से मिटटी में नमी का अभाव देखा जा रहा है। वहां बांधों-जलाशयों में पानी का स्टॉक भी कम बनाया जा रहा है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार रबी सीजन की सबसे प्रमुख तिलहन फसल सरसों का उत्पादन क्षेत्र इस वर्ष 31 अक्टूबर तक 18.75 लाख हेक्टेयर पर पहुंच सका जो पिछले साल की समान अवधि के बिजाई क्षेत्र 22 लाख हेक्टेयर से 3.25 लाख हेक्टेयर कम तथा पूरे सीजन के लिए नियत बिजाई लक्ष्य 40.50 लाख हेक्टेयर का 46 प्रतिशत है। पिछले साल राज्य में 40.01 लाख हेक्टेयर में सरसों की बिजाई का लक्ष्य रखा गया था। उल्लेखनीय है कि राजस्थान देश में सरसों का सबसे प्रमुख उत्पादक प्रान्त है जबकि इसके अन्य महत्वपूर्ण उत्पादक राज्यों में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, बंगाल और गुजरात शामिल है। इसके अलावा बिहार, झारखंड, आसाम, पंजाब एवं छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में भी सरसों का उत्पादन होता है। राजस्थान में चालू रबी सीजन के लिए दलहनों की बिजाई का लक्ष्य 22.87 लाख हेक्टेयर नियत किया गया है जिसमें अकेले चना के क्षेत्रफल का लक्ष्य 22.50 लाख हेक्टेयर शामिल है। इसमें से 31 अक्टूबर 2024 तक 7.25 लाख हेक्टेयर में चना तथा 4 हजार हेक्टेयर में अन्य दलहनों की बिजाई हो चुकी थी। इस तरह कुल नियत लक्ष्य की तुलना में करीब एक-तिहाई क्षेत्रफल में चना (दलहन) की बिजाई पूरी हो गई थी। लेकिन गेहूं एवं जौ का रकबा नियत लक्ष्य से बहुत पीछे चल रहा है और इसकी बिजाई की गति भी काफी धीमी है। इसकी संयुक्त बिजाई का लक्ष्य 35.81 लाख हेक्टेयर निर्धारित हुआ है जबकि वास्तविक बिजाई महज 56 हजार हेक्टेयर या 1.6 प्रतिशत क्षेत्रफल में ही संभव हो सका। गेहूं की बिजाई का लक्ष्य 32 लाख हेक्टेयर है वास्तविक वास्तविक रकबा 46 हजार हेक्टेयर के करीब ही पहुंच सका है। पिछले साल कुल मिलाकर राज्य में 31.06 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बोआई हुई थी।

जीएम फसलों के लिए नीति किसानों के अनुकूल होना आवश्यक

नई दिल्ली। घरेलू प्रभाग में खाद्यान्न एवं अन्य कृषि उत्पादों की तेजी से बढ़ती मांग को देखते हुए भविष्य में जेनेटिकली मोडिफाइड (जीएम) फसलों की तेजी की आवश्यकता महसूस हो सकती है। फिलहाल देश में जीएम फसलों के संवर्ग में केवल बीटी कॉटन के व्यावसायिक उत्पादन की अनुमति दी गई है जबकि जीएम सरसों का मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है। 23 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट के केन्द्र सरकार को अनुसंधान खेती, व्यापार एवं उपयोग के लिए सभी पक्षों के साथ विचार-विमर्श करके जीएम फसलों पर एक राष्ट्रीय नीति बनाने का निर्देश दिया था दरअसल केन्द्र सरकार ने वर्ष 2022 में जीएम सरसों को पर्यावरणीय रिलीज करने की सशर्त स्वीकृति प्रदान की थी। धारा मस्टर्ड हाइब्रिड था डीएमएच-11 को जब अनुमति देने की घोषणा हुई तब देश में हंगामा मच गया और इसका विरोध होने लगा। बाद में यह मामला अदालत में पहुंच गया। इस पर न्यायाधीशों सर्वसम्मत राय नहीं बनने के कारण सरकार को विशेष नीति बनाने के लिए कहा गया। जीएम फसलों के पक्षधर का कहना है कि भारत की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इसके व्यावसायिक उत्पादन की अनुमति देना आवश्यक है लेकिन दूसरी ओर आलोचकों का मानना है कि इससे कृषि क्षेत्र में संकुचन पैदा होगा पर्यावरण एवं जैव विविधता के लिए जोखिम पैदा होगा और मनुष्य तथा पशुओं के स्वास्थ्य के लिए खतरा बढ़ जाएगा। केन्द्र सरकार जीएम फसलों पर एक नीति तैयार कर रही है लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि यह नीति भारतीय किसानों के हित तथा कल्याण की सुरक्षा पर आधारित होनी चाहिए।

तिलहन-तेल के वैश्विक बाजार भाव में तेजी-मजबूती बरकरार रहने की उम्मीद

शिकागो। एक अग्रणी उद्योग विश्लेषक का कहना है कि आयातक देशों की बढ़ती मांग को देखते हुए तिलहन-तेल का वैश्विक बाजार भाव आगामी समय में भी ऊंचा और मजबूत रह सकता है। तिलहन-तेल विषय के विश्व प्रसिद्ध न्यूज लेटर-ऑयल वर्ल्ड के सम्पादक के अनुसार 2024-25 के विपणन वर्ष में तिलहनों के उत्पादकों एवं खरीदारों को ऊंचे दाम पर सामना करने के लिए तैयार रहना होगा। इसका प्रमुख कारण विश्व स्तर पर वनस्पति तेलों की मांग में वृद्धि का सिलसिला कायम रहना है। हाल ही में समाप्त हुए मार्केटिंग सीजन के दौरान खाद्य तेलों की वैश्विक मांग में 59 लाख टन का इजाफा दर्ज किया गया। 2024-25 के मार्केटिंग वर्ष के दौरान 17 प्रमुख किस्मों के वनस्पति तेलों एवं वसाओं की वैश्विक आपूर्ति (उपलब्धता) में 16 लाख टन का इजाफा होने का अनुमान है जबकि इसकी मांग में इससे कहीं ज्यादा बढ़ोत्तरी होगी। पाम तेल की अगुवाई में वनस्पति तेलों का भाव पहले से ही ऊंचे स्तर पर बरकरार है। विश्लेषक के मुताबिक केवल पिछले पांच सप्ताहों में यानी 24 अक्टूबर 2024 तथा चार प्रमुख किस्मों के खाद्य तेल की कीमतों में 110 से 180 डॉलर प्रति टन या 10 से 18 प्रतिशत तक की जोरदार बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। आगामी महीनों के दौरान वनस्पति तेलों की मांग मजबूत रहने की उम्मीद है। इन खाद्य तेलों एवं वसाओं की सकल वैश्विक खपत में ऊर्जा क्षेत्र की भागीदारी के कारण आगामी वर्षों के दौरान पाम तेल सोयाबीन तेल, रेपसीड / कैनोला तेल एवं सूरजमुखी तेल की खपत पर निर्भरता बढ़ने के आसार हैं और इसके उत्पादन में अपेक्षित बढ़ोत्तरी नहीं होने पर कीमतों में स्वाभाविक रूप से तेजी-मजबूती का माहौल बन सकता है। कनाडा में कैनोला का दाम अमरीकी सोयाबीन तेल की कीमतों में आने वाले उतार-चढ़ाव से काफी हद तक प्रभावित होता है। शिकागो एक्सचेंज में निकटवर्ती पोजीशनों के लिए 5 नवम्बर को सोयाबीन तेल का वायदा भाव 45 सेंट प्रति पौंड के करीब दर्ज किया गया जो 16 अगस्त के निम्न स्तरीय वायदा मूल्य की तुलना में 16 प्रतिशत ऊंचा था। दरअसल उस समय अमरीकी कृषि विभाग (उस्डा) ने 2024-25 सीजन के दौरान अमरीका में सोयाबीन का उत्पादन बढ़कर नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने का अनुमान लगाया था।

बेहतर घरेलू उत्पादन की वजह से खाद्य तेलों का आयात घटने की संभावना

मुम्बई। एक अग्रणी उद्योग संस्था- सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सी) ने कहा है कि 2024-25 के वर्तमान मार्केटिंग सीजन (नवम्बर-अक्टूबर) के दौरान भारत में वनस्पति तेलों का आयात घटकर 150 लाख टन के करीब सिमट सकता है जो 2023-24 सीजन के अनुमानित आयात 160 लाख टन से 10 लाख टन तथा 2022-23 सीजन के रिकॉर्ड आयात 165 लाख टन से 15 लाख टन कम है। एसोसिएशन के मुताबिक मौसम की अनुकूल स्थिति के कारण इस बार तिलहन फसलों का घरेलू उत्पादन बढ़ने की उम्मीद है जिससे खाद्य तेलों का बेहतर उत्पादन होगा और विदेशों से इसके आयात की आवश्यकता घट जाएगी। एसोसिएशन के कार्यकारी निदेशक के अनुसार फसलों की शानदार स्थिति को देखते हुए 2024-25 के पूरे मार्केटिंग सीजन के दौरान तिलहनों का कुल घरेलू उत्पादन 30 से 40 लाख टन तक बढ़ने की उम्मीद है जिससे घरेलू मांग को पूरा करने के बाद करीब 10 लाख टन का अधिशेष स्टॉक बच सकता है। इंडोनेशिया के बाली में आयोजित पाम तेल कांफ्रेंस में बोलते हुए 'सी' के कार्यकारी निदेशक ने कहा कि मौसम एवं मानसून की हालत अनुकूल रहने से भारत में चालू वर्ष के दौरान सोयाबीन तथा मूंगफली की उपज दर एवं पैदावार में भारी सुधार आया है जबकि रबी सीजन में सरसों का उत्पादन भी बढ़ने की संभावना है। 2023-24 के मार्केटिंग सीजन के दौरान भारत में पाम तेल का आयात घटकर 92 लाख टन पर सिमटने का अनुमान है जो 2022-23 सीजन के आयात 98 लाख टन से 6 लाख टन कम है। दूसरी ओर सूरजमुखी तेल का आयात इसी अवधि में 29 लाख टन से बढ़कर 35 लाख टन पर पहुंचने की संभावना है। पाम तेल का भाव ऊंचा होने से भारतीय आयातकों द्वारा सूरजमुखी तेल का आयात बढ़ाने पर जोर दिया गया। भारत में खाद्य तेलों के कुल आयात में पाम तेल की भागीदारी करीब 60 प्रतिशत रहती है। चालू वर्ष के दौरान मलेशिया में पाम तेल का बेंचमार्क मूल्य लगभग 30 प्रतिशत ऊंचा हो गया जिससे इसकी खरीद में भारतीय आयातकों की दिलचस्पी घट गई। सितम्बर की तुलना में अक्टूबर के दौरान भारत में पाम तेल का आयात 59 प्रतिशत बढ़ गया क्योंकि वहां जोरदार त्यौहारी मांग बनी हुई थी।

दलहन-तिलहन फसलों की पैदावार बढ़ाने हेतु सरकार को गंभीर प्रयास करने की जरूरत

नई दिल्ली। सामान्य धारणा यह है कि भारत में दलहन-तिलहन फसलों के उत्पादन में अपेक्षित बढ़ोत्तरी करने के लिए धान, गेहूं एवं मक्का की खेती पर किसानो की निर्भरता घटना जरूरी है धान की फसल को सबसे ज्यादा पानी की जरूरत पड़ती है जबकि पंजाब, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में भूमिगत जल का स्तर घटता जा रहा है। सरकार फसल विविधीकरण पर जोर दे रही है जिसके तहत खासकर दलहन तिलहन का उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है मगर अन्य फसलों का उत्पादन घटाकर इसकी पैदावार बढ़ाना व्यवहारिक कदम नहीं होगा। बेशक भारत फ़िलहाल चावल, गेहूं मक्का के उत्पादन से आत्मनिर्भर बना हुआ है लेकिन जब भी किसी कारणवश उत्पादन में गिरावट आती है तब इसका बाजार भाव उछल जाता है जिससे आम लोगो की परेशानी बढ़ जाती है यह सही है कि दलहनों एवं खाद्य तेलों का उत्पादन कम होने से विदेशो से इसके विशाल आयात की आवश्यकता पड़ती है जिस पर भारी भरकम बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च होती है लेकिन इस पर अंकुश लगाने के लिए वैकल्पिक प्रयास किए जाने की जरूरत है। भारत अभी दुनिया में चावल का सबसे बड़ा निर्यातक देश बना हुआ है और इसके शिपमेंट से देश को अरबो डॉलर की आमदनी प्राप्त होती है यदि इसका उत्पादन घटाने का प्रयास किया गया तो निर्यात आय स्वाभाविक रूप से प्रभावित होगी। मक्का की मांग एवं खपत तेजी से बढ़ती जा रही है जबकि आगे भी इसमें वृद्धि का सिलसिला जारी रहने की संभावना है क्योंकि एथनॉल निर्माण में इसकी विशाल मात्रा का उपयोग होगा। इसे पूरा करने से घरेलू उत्पादन असमर्थ साबित हो सकता है और विदेशो से इसके भारी आयात की आवश्यकता पड़ सकती है। जहां तक गेहूं का सवाल है तो इसका घरेलू उत्पादन एवं उपयोग लगभग संतुलित स्तर पर है जबकि बाजार भाव सरकारी समर्थन मूल्य से काफी ऊंचा चल रहा है गेहूं का घरेलू उत्पादन बढ़ाये जाने की आवश्यकता महसूस हो रही है दलहन-तिलहन फसलों के साथ समस्या यह है कि इसकी औसत उपज दर काफी नीचे रहती है जिसे ऊपर उठाने की आवश्यकता है इसी तरह खाली पड़े या परती खेतो में इसकी खेती पर जोर दिया जा सकता है। धान की कटाई होने के बाद जहां खेत खाली होते है वहां दलहन-तिलहन फसलों की खेती की जा सकती है। इससे मिटटी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ेगी।

दक्षिण भारत में बारिश-उत्तरी राज्यों में तापमान में गिरावट

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्व मानसून की सक्रियता तथा मन्नार की खाड़ी में उत्पन्न गहरे सर्कुलेशन के कारण दक्षिण भारत में पिछले कुछ दिनों के दौरान भारी बारिश हुई और इसका सिलसिला एक-दो दिन तक जारी रहने की संभावना है। वहीं दूसरी ओर उत्तरी भारत में मौसम शुष्क बना हुआ है और रात को तापमान में गिरावट आने लगी है। तमिलनाडु तथा केरल में हुई वर्षा से खेतों में पानी भर गया है। हालांकि केरल में मसालों की खेती ज्यादा होती है जबकि दलहन, तिलहन एवं मोटे अनाजों सहित अन्य कृषि फसलों का उत्पादन बहुत कम या नगण्य होता है लेकिन तमिलनाडु में रबी सीजन के दौरान दलहन-तिलहन फसलों की बिजाई होती है। इन दोनों राज्यों में गेहूं का उत्पादन नहीं होता है और न ही सरसों, जौ तथा चना की खेती की जाती है। उपरोक्त रबी फसलों का उत्पादन देश के उत्तरी, मध्यवर्ती एवं पश्चिमी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर होता है। इसके प्रमुख उत्पादक राज्यों में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, बंगाल एवं बिहार आदि शामिल हैं। रबी कालीन फसलों की बिजाई आरंभ हो चुकी है और मौसम की हालत काफी हद तक अनुकूल बनी हुई है। दक्षिण-पश्चिम मानसून सीजन के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर सामान्य औसत से अधिक बारिश हुई जिससे खेतों की मिटटी में नमी का पर्याप्त अंश मौजूद है। इसके अलावा अधिकांश जिंसों और खासकर गेहूं तथा चना का घरेलू बाजार भाव किसानों के लिए काफी आकर्षक स्तर पर बरकरार है। इसके इसके फलस्वरूप दोनों फसलों के बिजाई क्षेत्र में बढ़ोत्तरी होने की उम्मीद है। सरसों का क्षेत्रफल गत वर्ष के आसपास ही रहने की संभावना है। मसूर, मटर तथा जौ के क्षेत्रफल में भी ज्यादा उतार-चढ़ाव आना मुश्किल लगता है।

तमिलनाडु एवं केरल में भारी बारिश का सिलसिला जारी

तिरुअनन्तपुरम। देश के सुदूर दक्षिण राज्यों- खासकर तमिलनाडु एवं केरल में उत्तर-पूर्व मानसून की सक्रियता एवं अरब सागर के ऊपर बनने वाले साइक्लोनिक सर्कुलेशन के कारण पिछले कई दिनों से रूक-रूक कर मूसलाधार बारिश हो रही है जिससे न केवल जन जीवन अस्त व्यस्त हो गया है बल्कि रबी फसलों की बिजाई पर भी असर पड़ने की आशंका है। 'मसालों का प्रदेश' के नाम इस विख्यात केरल में अभी छोटी इलायची समेत कुछ अन्य मसालों के उत्पादन का सीजन चल रहा है जबकि अगले महीने से कालीमिर्च की नई फसल की तुड़ाई-तैयारी आरंभ होने वाली है। उधर तमिलनाडु में रबी कालीन फसलों की बिजाई का सीजन चल रहा है। लेकिन बारिश का दायरा काफी हद तक इन दोनों राज्यों में ही सीमित है और आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तेलंगाना जैसे प्रांतों में वर्षा नहीं या नगण्य हो रही है। महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल में भी पिछले कई दिनों से अच्छी वर्षा नहीं हुई है। दाना समुद्री चक्रवाती तूफान के समय बारिश हुई थी। देश के अन्य प्रांतों में मौसम शुष्क बना हुआ है और तापमान में गिरावट आ रही है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा मध्य प्रदेश सहित अन्य राज्यों में रबी फसलों की बिजाई जोर पकड़ने लगी है जबकि खरीफ फसलों की कटाई-तैयारी की गति भी तेज हो गई है। गेहूं, चना, सरसों, जौ, मसूर एवं मटर सहित अन्य फसलों की खेती में किसानों की सक्रियता बनी हुई है। ऊंचे बाजार भाव को देखते हुए इस बार खासकर गेहूं एवं चना के बिजाई क्षेत्र में अच्छी बढ़ोत्तरी होने की उम्मीद है जबकि सरसों, मसूर एवं मटर का क्षेत्रफल पिछले साल के आसपास ही रहने की संभावना है। रबी सीजन में उड़द एवं मूंग तथा मूंगफली आदि की खेती भी की जाती है।

Department of Consumer Affairs (Price Monitoring Division)
All India Daily Weighted Average Prices Of Major Edible Oils

Daily Prices	Edible Oils	(Latest)	1 Month Ago	1 Year Ago	% Variation over	
		07/11/2024	07/10/2024	07/11/2023	1 Month	1 Year
All-India Retail Price (in □ /kg)	Groundnut Oil	195.47	188.15	193.17	3.89	1.19
	Mustard Oil	168.28	156.64	139.12	7.43	20.96
	Vanaspati	141.58	132.14	126.95	7.14	11.52
	Soya Oil	140.01	131.29	125.07	6.64	11.95
	Sunflower Oil	146.22	134.44	124.35	8.76	17.59
	Palm Oil	127.4	117.2	100.47	8.70	26.80
All-India Consumer Wholesale Price (in □ /qtl)	Groundnut Oil	18345.07	17716.59	18120.05	3.55	1.24
	Mustard Oil	15849.55	14731.16	12999.93	7.59	21.92
	Vanaspati	13152.53	12240.84	11424.45	7.45	15.13
	Soya Oil	13114.02	12226.95	11483.55	7.26	14.20
	Sunflower Oil	13828.87	12618.09	11530.45	9.60	19.93
	Palm Oil	12158.76	11006.85	9244.9	10.47	31.52

बाजार भविष्य

★ अंतराष्ट्रीय तेल तिलहनों बाज़ारों में तेजी की प्रबल संभावनाएं।
★ बायो डीजल मैं बढ़ रही ही खाद्य तेलों की खपत।
★ इंडोनेशिया में पाम का इस्तेमाल और अमेरिका, अर्जेंटीना, ब्राज़ील में सोयातेल की मांग मं हो रहा है इजाफा।
★ 2024 के अंत में सकल तेलों की खपत 60 लाख टन बढ़ सकती है जबकि उपलब्धता केवल 16 लाख टन बढ़ रही है।
★ आगामी सीजन 2024-25 में उपभोगकर्ताओं को करना होगा अधिक खर्च।
★ पाम तेल की कीमतों में देखि जा रही है बढ़ोतरी।
★ पिछले 5 सप्ताहों में पाम भाव $110 से बढ़कर $180/ टन पहुंचे एवं अन्य तेलों के 10 -18% बढे।
★ तेलों की औद्योगिक खपत में 20% का इजाफा।
★ यूज़्ड कुकिंग आयल की उपलब्धता कमज़ोर पड़ने से ने तेल की मांग बढ़ी।
★ सूरजमुखी का उत्पादन घटने के कारण केनोला की डिमांड बढ़ी।
★ USDA ने अभी हाल ही में मलेशिया में पाम का स्टॉक 161 लाख टन में सिमटने का दिया अनुमान पिछले अनुमान से 15 लाख टन कम।
★ खरीफ 2024-25 पहला उत्पादन अनुमान।
★ चालू सीजन में मौसम ने दिया फसलों का पूरा साथ। मोटे अनाज को छोड़ अन्य सभी फसलों की बिजाई में बढ़ोत्तरी।
★ अच्छा पानी पड़ने से किसानों ने मोटे अनाज (जिनमें कम पानी की जरुरत होती है) को प्राथमिकता नहीं दी।
★ धान, मक्का, दलहन (उड़द को छोड़) और सोया के उत्पादन अधिक होने का दिया अनुमान।
★ तिलहन फसलों में मूंगफली का उत्पादन मामूली बढ़कर 103.6 लाख टन रहने का अनुमान, सोया उत्पादन जो गत वर्ष 130.62 लाख टन था मामूली बढ़कर 133.6 लाख टन बताया गया।
★ सोया उत्पादन में उस अनुपात में वृद्धि नहीं दिखाई दी जितना अनुमान लगाया गया।
★ अरंडी फसल व बिजाई दोनों लेट होती है। बारिश समय पर पड़ने से किसानों का रुझान अन्य फसल पर पड़ा व एरिया घटा। कुल उत्पादन 15.53 लाख टन में सिमट सकता है जो गत वर्ष 19.6 लाख टन था।
★ तिल उत्पादन गत वर्ष से मामूली बढ़कर 4 लाख टन के आसपास के आकड़े दिए गये।
★ राजस्थान में सरसों बिजाई अक्टूबर के अंत तक 18.76 लाख हेक्टेयर पहुंची, बिजाई लक्ष्य 40.50 लाख हेक्टेयर का 46% है।
★ चना की बिजाई 7.25 लाख हेक्टेयर हुई, अन्य रबी दलहनों की 3 हजार हेक्टेयर पहुंची।
★ गेहूं और जौ की बिजाई 55,885 हेक्टेयर पहुंची।
★ इस वर्ष गेहूं बिजाई लक्ष्य 32 लाख हेक्टेयर रखा गया जो गत वर्ष 31 लाख हेक्टेयर था।

igrain India Pvt.Ltd.
The Complete Agri Solution
2181-A, Ist Floor, Raja Park, Main Rani Bagh Road, DELHI-110034

Department of Consumer Affairs
(Price Monitoring Division)

Prices in 4 Metros and Ranchi

Daily Retail Prices (□ /kg) in 4 Metros and Ranchi										
Major Edible Oils	Delhi		Mumbai		Kolkata		Chennai		Ranchi	
	07/11/2024 (Latest)	07/11/2023 (1 Year Back)	07/11/2024 (Latest)	07/11/2023 (1 Year Back)	07/11/2024 (Latest)	07/11/2023 (1 Year Back)	07/11/2024 (Latest)	07/11/2023 (1 Year Back)	07/11/2024 (Latest)	07/11/2023 (1 Year Back)
Groundnut Oil	**216**	214	**232**	177	**NR**	NR	**182**	187	**253**	225
Mustard Oil	**178**	143	**192**	165	**NR**	131	**210**	153	**173**	127
Vanaspati	**163**	126	**148**	149	**NR**	121	**159**	108	**130**	95
Soya Oil	**158**	124	**152**	126	**NR**	115	**NR**	NR	**155**	115
Sunflower Oil	**159**	139	**170**	135	**NR**	121	**156**	110	**148**	118
Palm Oil	**134**	99	**131**	100	**NR**	95	**136**	86	**132**	90